प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी का वैश्विक स्वरूप

Shahzada Nazir
Ph.D Scholar, Kashmir University

बीसवी शती के अंतिम दशक को महिला उपन्यास लेखन का दशक कहा जाता है क्योंकि इस समय सैंकड़ों महिला लेखिकाओं ने हिन्दी उपन्यास जगत में अपना योगदान दिया और नारी जीवन की हर छोटी–बड़ी समस्या पर लेखनी चलाई, जैसे– विधवा समस्या, वेश्या विवाह, दहेज, अनमेल विवाह, बलात्कार, आर्थिक निर्भरता, सास–पति द्वारा प्रताड़ना, कामकाज के क्षेत्र में समस्याऐं आदि। प्रभा खेतान ने भी अपने उपन्यासों में स्वातन्त्र्योत्तर कालीन नारी का चित्रण किया है। नारी के जिस जीवन को उन्होंने स्वयं जिया, भोगा, निकट से जाना–पहचाना एवं अनुभव किया उसे ही अपने कथापात्रों के माध्यम से प्रकट किया है। उनके उपन्यासों में पारंपारिक विचारों की, धार्मिक नारी भी दिखाई देती है साथ ही अपने हक के लिए लड़ने वाली नारी भी दृष्टिगत होती है। शिक्षित–अशिक्षित, कामकाजी नारी, गृहस्थी चलाने वाली नारी, भारतीय–विदेशी नारी, आधुनिक नारी आदि विभिन्न प्रकार की नारियों का चित्रण लेखिका के उपन्यासों में पाया जाता है।

नारी का चित्रण करते हुए लेखिका ने अपने नारी–पात्रों के विविध रूपों– मां, बेटी, बहन, पत्नी, सास, बहू, ननद, भाभी आदि को चित्रित किया है। लेखिका ने माताओं में बेटी से अधिक बेटों से वात्सल्य जताने वाली मां अधिक मिलती है। *तालाबंदी* के श्यामबाबू की बूढी मां निरन्तर बेटे के नाम की माला जपती है और ईश्वर से प्राथना करती– ''हे मेरी सती दादी! मेरा लंगड़िया बाबा हनुमान जी। थे सगा चालियों, मेरे लाल की थेई रक्षा करोगा।''[1]

छिन्नमस्ता उपन्यास की कस्तूरी अपने दोनों बेटे–अजय और विजय– से बहुत प्यार करती है। वह एक ऐसी मां बन कर उभरती है जो बच्चों की खातिर अपना सब कुछ समर्पित कर देती है– ''अम्मा ने अपने हीरे की चारों चूड़ियां बेची।''[2] इसी उपन्यास की प्रिया अपने वैवाहिक जीवन से पीड़ित और असन्तुष्ट हैं किन्तु फिर भी अपने बच्चे के भविष्य के खातिर सब सहन कर जीती है।

पीली आंधी उपन्यास की पन्नालाल सुराणा की मां बेटे की हत्या से दुखी होकर उसके गम में आत्महत्या करती है। वह बेटे की हत्या का सदमा बर्दाशत नहीं कर पाती और कुएं में कूदकर अपनी जान देती है। उपन्यास की ताई जी भी अपना बच्चा न होने के कारण अपनी ममता देवर के बच्चों पर लुटा देती है। किसी भी मां का चरम आनन्द उसकी संतान है। *स्त्री पक्ष* उपन्यास की वृंदा को अपनी नवजात बेटी को स्तनपान कराने में आनन्द मिलता है। वह आकंठ उस आनन्द में डूबती है– ''यह प्यार है, बिल्कुल अंधा और बाध्यकारी प्यार, इसी को मां की ममता कहते हैं, वह इस बच्चे को प्यार किए बिना नहीं रह सकती। और बड़े अल्हाद के साथ उसने सोचा कि, अब मुझे स्वतंत्रता की क्या जरूरत है... इस दुनिया में भला मां की बराबरी कोई कर सकता है।''[3] *छिन्नमस्ता* में दाई मां प्रिया को मां का प्यार देती है। अपेक्षित प्रिया के लिए उसके स्तनों में दूध उभरकर आता है। वह प्रिया को सगी मां से भी अधिक प्यार देती है। दाई मां का अपेक्षित प्रिया के साथ स्नेहभरा, वात्सल्यमयी रिश्ता है– ''मैं दाई मां के गले में हाथ डालकर गौद में बैठी रहती। सब लोग मूझे दाई की बेटी कहते।''[4]

प्रभा खेतान के उपन्यासों में कुछ **परम्परागत नारियों** का चित्रण हुआ है। *छिन्नमस्ता, पीली आंधी, स्त्री पक्ष* उपन्यासों के कुछ नारी पात्र परम्परागत मूल्यों से चिपकी दृष्टिगत होते है। *छिन्नमस्ता* की कस्तूरी जब चौथी बेटी को जन्म देती है तब सास उसे देखने तक नहीं जाती। वह कहती है– ''हे रामजी! चार–चार बेटियां आ पड़ी! कठ बेटा पड़या हैं।''[5] उन्हें बेटी का पैदा होना अच्छा नहीं लगता।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में नौकरपेशी नारी के साथ–साथ **घरेलू नारियों** का चित्रण मिलता है। *तालाबंदी* उपन्यास की सुमित्रा एक आदर्श पत्नी है। जो अपने पति को भगवान समझती है। उसे पति के सिवा जीवन में किसी की चाहत नहीं है। सुमित्रा पति, परिवार और घर पर निस्वार्थ भाव से अपने आपको न्यौछावर कर आदर्श पत्नी होने का प्रमाण देती है– ''देवता जैसा पति। सभी कुछ तो भगवान ने दिया था, इसलिए शिकायत क्यों करे? और किस लिए मन में घमण्ड लाये ?''[6]

अपने–अपने चेहरे की मिसेस गोयनका भी एक पारम्पारिक पत्नी के रूप में प्रस्तुत होती है। वह पति की हर हरकत को बर्दाशत करती है, यहां तक कि वह अपनी सौत रमा को भी बर्दाशत कर रही है। *पीली आंधी* में पद्मावती को अपने पति एवं परिवार के प्रति अत्यन्त स्नेह है। वह पति के प्रति संवेदनशील है। पति–सेवा में रत यह पतिव्रता मन ही मन सोचती है– ''जैसे पति की सेवा करना मेरा धरम है, वैसे ही सास की आज्ञा मानना मेरा फरज है.... वह प्यार से पति का पैर दबाती थी, माथे पर तेल लगाती थी।''[7]

स्त्री पक्ष की वृंदा अपने दोनों बच्चों के कारण दिनभर व्यस्त रहती है। वृंदा उत्साहित होकर कहती है– ''इन बच्चों से अलग मेरी जिन्दगी का कोई मकसद नहीं रहा। इन्हें संभालते, खिलाते–पिलाते, सुलाते हुए मेरा समय कैसे गुजर जाता है मुझे पता नहीं चलता... भगवान को खोजने की जरूरत नहीं। मैं पूजा किसकी करूं ? सारे तीर्थ मुझे अपने बच्चों में फलीभूत होते लगते हैं।''[8]

प्रभा खेतान के उपन्यास–साहित्य में **शिक्षित एवं कामकाजी** महिलाओं का रूप भी परिलक्षित होता है। *छिन्नमस्ता* उपन्यास की प्रिया; *अपने–अपने चेहरे* की रीतू; *पीली आंधी* की सोमा; *स्त्री पक्ष* की वृंदा आदि पति द्वारा सताई गई शिक्षित नारियां हैं। *छिन्नमस्ता* की प्रिया शिक्षा के बलबूते पर तनाव से मुक्ति पाती है। वह अपना अलग व्यवसाय आरम्भ करती है। *पीली आंधी* की सोमा एक शिक्षित नारी होते हुए भी अपने जीवन का सही निर्णय लेने का अधिकार नहीं पाती है। किन्तु फिर भी वह हार न मानकर अपनी शिक्षा जारी रख सही मार्ग चुनने में सफल हो जाती है। *अपने–अपने चेहरे* की रमा और रीतू शिक्षित नारियां है। वह स्वयं आत्मनिर्भर होकर बिजनेस चलाती है। *स्त्री पक्ष* की वृंदा पति से तलाक मिलने के बाद भी अपना ब्यूटी क्लिनिक खोलती है, अतः स्वयं को तथा अपने दोनों बच्चों को संभाल लेती है।

अतः लेखिका ने भारतीय नारी का कामकाजी, घरेलू, शिक्षित, अशिक्षित– हर प्रकार का रूप चित्रित किया है। किन्तु यह तय है कि अधिकतर नारी पात्र अपनी शिक्षा के बल पर व्यवसाय या नौकरी कर स्वावलंबी, स्वाभिमान पूर्ण एवं मुक्त जीवन जीना पसन्द करती है।

प्रभा खेतान ने अपने उपन्यास–साहित्य के माध्यम से **विदेशी नारी** के जीवन की व्यथा को उजागर किया है। उन्होंने विदेशी पृष्ठभूमि पर आधारित तीन उपन्यास लिखे है– *आओ पेपे घर चले, अग्निसंभव* और *एड्स*। इन तीनों उपन्यासों में लेखिका ने विदेशी नारी के हर रूप को चित्रित करने का प्रयास किया है। भारतीय नारी की तरह विदेशी नारी भी यातना, पीड़ा, घुटन, अकेलेपन से गुजरती है। विदेशी नारी के पास ऐश्वर्य होते हुए भी सुखद जीवन का अभाव है।

भारतीय नारी की तरह विदेशी नारी भी सदैव अन्याय सहती आई है। जब पति द्वारा प्रताड़ना हद से आगे बढ़ती है तब वह **विद्रोह** पर उतर आती है। *अग्निसंभव* की आइवी एक विद्रोही पत्नी के रूप में प्रस्तुत होती है, जो शादी तो करती है, परन्तु शराबी पति से हर रोज की अनबन से मुक्ति पाने हेतु तलाक लेकर चीन से हांगकांग चली आती है। *आओ पेपे घर चले* की हेल्गा पति और बच्चों को छोड़कर पिता के हत्यारों से बदला लेना चाहती है। वह परिवार को छोड़कर चली जाती है और पति के प्रति अपना विद्रोह व्यक्त करती है– ''मुझे नहीं चाहिए था यह घर, ये बच्चे, यह दौलत। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए था। कभी नहीं... मैंने उस तुम्हारे बाप से, सिर्फ एक चीज़ मांगी थी कि वह तुम्हें किम्बूत में भेज दे। बस एक बच्चे को, मेरे खून के टुकड़े को, जो मेरे मकसद को जलाए रखे।''[9]

विदेश में भी माता–पिता और संतानों के संबंध प्रायः स्नेह भरे रहते है किन्तु कभी–कभी माता–पिता और संतान के बीच एक ऐसी स्थिति उपस्थित होती है कि जब संतान माता–पिता के आदर्शों पर नहीं चलते तब माता–पिता उनका तिरस्कार करने लगते हैं। ऐसी अवस्था में स्वतन्त्र विचारों से अभिभूत संतान माता–पिता के प्रति विद्रोह व्यक्त करते है। *आओ पेपे घर चले* की एडिना अपने माता–पिता के हरकतों से नाराज होकर कहती है– ''जो मां–बाप मेरी भावनाओं की कद्र नहीं कर सकते, जिनकी निगाहों में मेरे लिए सम्मान नहीं उनसे न मुझे संबंध रखना है और न ही उन के पास जाना है।''[10]

नारी विदेशी हो अथवा भारतीय हो–उसका हृदय स्नेह, ममता से भरा होता है। *आओ पेपे घर चले* की आइलिन; *अग्निसंभव* की आइवी में **वात्सल्यमयी माता** का रूप दिखाई देता है। आइवी का पुत्र वॉग क्रान्तिकारियों के साथ मिल जाता है तब वह दिल से टूट जाती है। पुत्र

द्वारा भेजे पत्रों को बार–बार पढ़कर रोती रहती है। बेटे का गम बुलाने के लिए अपने बॉस शिव के बेटे को गोद लेकर उसे अपने बेटे वॉग जितना ही प्यार करती है। *आओ पेपे घर चले* की आइलिन अपने मृत पुत्र के दुख की तड़प का समाधान पशुप्रेम में पाती है। वह अकेली एक कुत्ते के सहारे अपने अकेलेपन का निवारण करती है।

लेखिका ने पाश्चात्य नारी का नकारात्मक रूप भी प्रस्तुत किया है, जो हर हाल में केवल अपने बारे में, अपने कैरियर, सौन्दर्य और ऐश्वर्य के बारे में सोचती हैं। यहां तक कि मातृत्व उन्हें वरदान न लग कर अभिशाप लगता है। और यह आजकल विदेशी देशों की ज्वलंत समस्या है कि वहां की नारी संतान को जन्म नहीं देना चाहती। प्रभा जब कैथी से बच्चे के बारे में पूछती है तो वह कहती है– ''बच्चा नहीं चाहिए। अपने आप को बच्चे के लिए आहुति हो जाती है, मुझसे बच्चा नहीं सम्भलेगा। बेबी सीटर पर पालने से अच्छा है, पैदा ही मत करो।''[11]

विदेशी नारी पैसा कमाने की होड में दिन–रात मेहनत करती है। यह नारियां अधिकतर **नौकरपेशा,** व्यवसाय के प्रति आकृष्ट है। सत्तर वर्षीय आइलिन सौ की स्पीड़ से गाड़ी चलाती है– ''गाड़ी चलाते–चलाते उसने कभी दायें, तो कभी बायें हाथ से अपने बाल संवारे, क्लिप लगाया, गालों पर क्रीम–पफ फेरा, फिर लिपिस्टिक फैलाई। अब गाड़ी की स्पीड़ एक सौ थी।''[12] यदि भारतीय सत्तर वर्षीय महिलाएं ऐसा करें तो मजाक उड़ाया जाता है। अमेरिका में ब्यूटी क्लिनिकों की एक दुनिया है, जिसमें कई नारियां रोज़ी–रोटी कमाती है। प्रभा भी कैथी के साथ अमेरिकी सैलून में बाल कटवाने एवं मसाज करने जाती है। तब जिमी पूछता है– ''आप बालों में किस चीज़ का मसाज लेंगी ?... वैसे बियर का मसाज ठीक रहेगा। नहीं क्या ? वैसे आपकी दोस्त गाय के पेशाब का मसाज ले रही है। यह अभी इन्हीं दिनों हमारे केमिस्ट ने तैयार किया है।''[13] *अग्निसंभव* की आइवी टैक्सी ड्राइवर से लेकर मैनेजर के पद का काम करती है। वह काम करते–करते खाना–पीना तक भूल जाती है। वह अठारह घंटे काम करती है अर्थात् सभी नारियां महत्वकांक्षी बनकर आर्थिक क्षेत्र को महत्व देती नजर आती है।

आज शारारिक पवित्रता, पतिव्रता धर्म, प्रेम की धारणा बदलती हुई नज़र आती है। पहले नारी हर हाल में अपनी मर्यादा अपने पतिव्रता धर्म का पालन करना अपना कर्तव्य समझती थी

किन्तु आज यह मान्यता बदल गई है। दाम्पत्य जीवन में पति यदि पत्नी से पूर्ण समर्पण और ईमानदारी की मांग करता है तो बदले में पत्नी भी पति से यही अपेक्षा रखती है। ''औरत जैसे पूरुष के लिए जीती है पुरुष भी क्यों नहीं औरत के लिए जी पाती।''[14] वास्तव में औरत किसी दूसरे पुरुष के साथ संबंध बनाने से पहले हजार बार सोचती है, विचारती है, अपने अन्दर के संस्कारों, मान–मर्यादा से लड़ती है तब कही जाकर प्रेम की प्रबलता तथा समाज से जूझने की दृढता प्राप्त कर वह पर–पुरुष के साथ संबंधों को आकार देती है। प्रभा खेतान ने विवाह संस्था पर लगे इन प्रश्न चिन्हों को भी छुआ है। यह पर–पुरुष या पर–नारी सम्बन्ध कहीं इच्छा, कही उपयोग्य तो कहीं स्वार्थ–लाभ के वश उजागर हुए हैं।

छिन्नमस्ता उपन्यास में छोटी मां सौत से पीड़ित हैं। उसकी पुत्री– नीना– की व्यथा यह है कि वह एक नाजायज संतान है। प्रिया भी कॉलज के प्रो. मुखर्जी से प्रेम करती है। प्रो. मुखर्जी प्रिया से शादी का वादा करके उसे प्रेम जाल में फंसा कर उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है। प्यार में धोखा मिलने के पश्चात् प्रिया कहती है– ''मैंने प्यार किया था पूरी ईमानदारी के साथ अपने को समर्पित किया था, बिना किसी शर्त के, बिना किसी से कुछ पूछे। बहुत बाद में समझ आया कि यह बिना पूछे शर्तहीन संबंध आपकी मानवीयता का द्योतक भले ही है, पर आपके व्यवहारिक दिवालिएपन का परिचायक भी होता है...।''[15]

अपने–अपने चेहरे उपन्यास की रीतू स्पष्ट कहती है कि वह अपनी मां की भांति अपने अमीर पति के विवाहोत्तर अनैतिक सम्बंध नहीं सह सकती। *पीली आंधी* उपन्यास में विवाहोत्तर संबंधों के अनेक प्रसंग चित्रित है। सोमा अपने नपुंसक पति का घर त्याग कर बिना विवाह किए अन्य विवाहित पुरुष के साथ रहती है। सोमा सोचती है– ''आखिर गलत क्या है ? ऐसा कौन–सा अपराध कर रही हूं ?... क्या कभी विवाहित स्त्री ने अन्य विवाहित पुरुष से प्यार नहीं किया ? फिर यह भय और ग्लानि क्यों ?''[16] दूसरी ओर विधवा पद्मावती जानती है कि उसका मुन्शी–सुराणा जी– उसे प्रेम करता है और सुराणा का निश्छल प्रेम उसे आकर्षित भी करता है। किन्तु फिर भी वह अपनी मर्यादा, अपनी लक्ष्मण रेखा और अपना विधवा धर्म भंग नहीं करती।

एड्स उपन्यास की कुक्कू अपने पति के मित्र से प्रेम कर उससे शरीरिक संबंध स्थापित करती है और अंत में 'एड्स' जैसी भयानक बीमीरी का शिकार होकर अस्पताल में दिन काटती है।

स्त्री पक्ष उपन्यास में भी विवाहोत्तर संबंधों की अभिव्यक्ति है। उपन्यास की नायिका वृंदा कॉलेज के एक लड़के अनिश से प्रेम करती है। वह शादी से पहले वृंदा के साथ शरीरिक संबंध रखना चाहता है। परन्तु वृंदा मना करती है। अनिश कॉलेज की ही एक अन्य दोस्त के साथ प्रेम करता है और वह लड़की अनिश के साथ किसी भी हद तक को पार करती है। वह कहती है– ''यदि मन मिल जाए तो शरीर को क्यों संजोना? कुंवारापन कोई संपत्ति तो नहीं है कि उसे इतना संभाल कर तौलकर सात तालों में बंद कर रखा जाए।''[17]

अतः कहा जा सकता है कि लेखिका ने यह जतलाने का प्रयास किया है कि नारी संसार के किसी भी कोने में रह रही हो, उसकी समस्याऐं समान हैं। वह हर पल अपने अस्तित्व को बनाए रखने में संघर्षरत है चाहे फिर वह मां हो, पत्नी हो या प्रेमिका हो। उसे हर पल नई–नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कहीं वह पुरुष से पीड़ित है तो कहीं स्वयं नारी से। कहीं वह आदर्श रास्ता अपनाती है तो कहीं विद्रोहरणी बन कर कुमार्ग पर भी जाती है। किन्तु यह तय है कि उसका जीवन–पथ सरल नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खेतान, प्रभा. *तालाबंदी.* पृ. 23–24
2. ... *छिन्नमस्ता.* पृ. 40
3. ... *स्त्री पक्ष.* पृ. 22
4. ... *छिन्नमस्ता.* पृ. 57
5. वही पृ. 26
6. ... *तालाबंदी.* पृ. 28
7. ... *पीली आंधी.* पृ. 94
8. ... *स्त्री पक्ष. पृ. 23*
9. ... *आओ पेपे घर चले.* पृ. 94
10. वही पृ. 117
11. वही पृ. 105
12. वही पृ. 22
13. वही पृ. 113

14. ... *अन्या से अनन्या.* पृ. 60

15. ... छिन्नमस्ता. पृ 123

16. ...*पीली आंधी .* पृ. 242

17. ... स्त्री पक्ष. पृ. 20

निर्देशिका
डॉ. ज़ाहिदा जबीन
सहायक प्राध्यापक
कश्मीर विश्वविद्यालय,
हिन्दी विभाग,
श्रीनगर

शोधार्थी (पीएच. डी)
कुमारी शहज़ादा नज़ीर
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय,
श्रीनगर